चतुर्थ अध्याय

प्रदत्तो का विश्लेषण

एवं व्याख्या

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित उददे्श्य के अध्ययन हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप में होता है। प्रदत्तों के विश्लेषण के अन्तर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा शोध उददे्श्यों का निष्कर्ष प्राप्त निष्पत्ति द्वारा किया जाता हैं।

– **जे.एच. पाईनकर के शब्दों में –**

"एक मकान का निर्माण पत्थरों से होता है, किन्तु पत्थरों के ढेर से नहीं वरन् जटिल पत्थरों को सुव्यवस्थित रूप से रखने से होता है। वैज्ञानिक तथ्य का निर्माण भी तथ्यों के संकलन उपरांत उचित विश्लेषण तथा व्याख्या द्वारा होता है।"

– **पी.व्ही.युग के शब्दो में –**

"संकलित तथ्यों के उचित संस्थिति संबंधों के रूप व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधारशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण है अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष हैं।"

4.2 परिकल्पनाओं का सत्यापन :–

प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकी विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस

शोध अध्ययन हेतु कुल 5 परिकल्पनाएँ रखी गई है। जिसकी जाँच करने के उपरान्त त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई जो अग्रांकित सारणियों में प्रस्तुत है:-

परिकल्पना –1

छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच के लिये 'टी' का मूल्य निकाला गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.1

छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता को दर्शानेवाली 't' मूल्य की सार्थकता

अ.क्र.	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश (df)	'टी' मान ('t')
1.	छात्र	40	164	41.92	78	2.70
2.	छात्राएँ	40	191.2	49		

सार्थकता स्तर

0.01 पर 't' = 2.59 df = 78 (स्वतंत्रता अंश)

स्पष्टीकरण–

तालिका क्रमांक 4.2.1 से स्पष्ट होता है कि कुल 80 विद्यार्थी है। जिसमें 40 छात्र का मध्यमान 164 है तथा मानकविचलन 41.92 है। 40 छात्राओं का मध्यमान 191.2, मानकविचलन 49 है। दोनों का स्वतंत्रता अंश 78 है। 'टी' का मान 2.70 है।

विश्लेषण –

तालिका में 'टी' का मान 2.70 है। जो कि 0.01 स्तर के टेबल मूल्य 2.59 से ज्यादा है। अर्थात् सार्थक है। इसलिए परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

छात्र तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता में सार्थक अंतर है।

परिकल्पना –2

छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच के लिये 'टी' का मूल्य निकाला गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.2

छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को दर्शानेवाली 't' मूल्य की सार्थकता

अ.क्र.	लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता अंश (df)	'टी' मान ('t')
1.	छात्र	40	53.87	12.60	78	0.26
2.	छात्राएँ	40	54.65	14.29		

सार्थकता स्तर

0.05 पर 't' = 1.96 df = 78 (स्वतंत्रता अंश)

स्पष्टीकरण–

तालिका क्रमांक 4.2.2 से स्पष्ट होता है कि कुल 80 विद्यार्थी है। जिसमें 40 छात्र का मध्यमान 53.87 है तथा मानकविचलन 12.60 है। 40 छात्राओं का मध्यमान 54.65, मानकविचलन 14.29 है। दोंनों का स्वतंत्रता अंश 78 है। 'टी' का मान 0.26 है।

विश्लेषण –

तालिका में 'टी' का मान 0.26 है। जो कि 0.05 स्तर के टेबल मूल्य 1.96 से कम है। अर्थात् सार्थक नहीं है। इसलिए परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अतः यह कह सकते हैं कि छात्र तथा छात्राओं को शैक्षिक सुविधा एक जैसी ही दी जाती होगी। शालाओं में पाठ्यक्रम एक जैसा ही है। और उनको एक ही शैक्षिक वातावरण में पढ़ाया जाता है। इसी कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिकल्पना –3

छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच के लिए सहसंबंध निकाला गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.3

छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

अ.क्र.	चर	संख्या 'N'	सहसंबंध गुणांक 'r'
1.	भाषा सृजनशीलता	40	0.71
2.	शैक्षिक उपलब्धि	40	

सार्थकता स्तर

0.01 पर 'r' = .393 df = 38 (स्वतंत्रता अंश)

स्पष्टीकरण–

तालिका क्रमांक 4.2.3 से स्पष्ट होता है कि यह 40 छात्र है। तथा भाषा सृजनशीलता और उपलब्धि का संहसंबंध 0.71 आया है। स्वतंत्रता अंश 38 है।

विश्लेषण –

तालिका में सह–संबंध 'r' का मान 0.71 आया है। जो कि 0. 01 स्तर के टेबल मूल्य .393 से ज्यादा है। अर्थात् सार्थक है। यहाँ छात्रों की भाषा सृजनशीलता और उपलब्धि में धनात्मक घनिष्ठ सह–संबंध है। इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

छात्रों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

परिकल्पना –4

छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच करने के लिए सहसंबंध निकाला गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.4

छात्राओं की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

अ.क्र.	चर	संख्या 'N'	सहसंबंध गुणांक 'r'
1.	भाषा सृजनशीलता	40	0.74
2.	शैक्षिक उपलब्धि		

सार्थकता स्तर

0.01 पर 'r' = .393 df = 38 (स्वतंत्रता अंश)

स्पष्टीकरण–

तालिका क्रमांक 4.2.4 से स्पष्ट होता है कि यह 40 छात्राएँ है। तथा छात्राओं की भाषा सृजनशीलता और उपलब्धि का संहसंबंध 0.74 आया है। स्वतंत्रता अंश 38 है।

विश्लेषण –

तालिका में सह–संबंध 'r' का मान 0.74 आया है। जो कि 0.01 स्तर के टेबल मूल्य .393 से ज्यादा है। अर्थात् सार्थक है। यहाँ छात्राओं की भाषा सृजनशीलता और शैक्षिक उपलब्धि का धनात्मक घनिष्ठ सह–संबंध है। इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

छात्राओं की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।

परिकल्पना –5

विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक संबंध नहीं है।

प्रस्तुत परिकल्पना की जाँच करने के लिए सहसंबंध निकाला गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.5

विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

अ.क्र.	चर	संख्या 'N'	सहसंबंध गुणांक 'r'
1.	भाषा सृजनशीलता	80	0.71
2.	शैक्षिक उपलब्धि		

सार्थकता स्तर

0.01 पर 'r' = .283 df = 78 (स्वतंत्रता अंश)

स्पष्टीकरण–

तालिका क्रमांक 4.2.5 से स्पष्ट होता है कि यह 80 विद्यार्थी है। विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता और शैक्षिक उपलब्धि का संहसंबंध 0.71 आया है। स्वतंत्रता अंश 78 है।

विश्लेषण –

तालिका में सह–संबंध 'r' का मान 0.71 आया है। जो कि 0.01 स्तर के टेबल मूल्य .283 से ज्यादा है। अर्थात् सार्थक है। यहाँ विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता और शैक्षिक उपलब्धि का धनात्मक घनिष्ठ सह–संबंध है। इसलिए यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष –

विद्यार्थियों की भाषा सृजनशीलता तथा शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक संबंध है।